ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

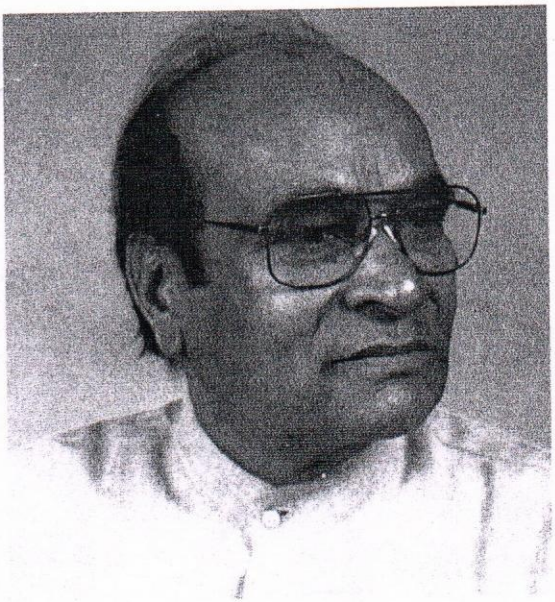

श्रवणकुमार गोस्वामी के रचनाओं पर केन्द्रित

22

वर्ष - 12 ■ अकं - 22 ■ जनवरी-जून - 2019 ■ मूल्य ५० रुपए ■ पूर्णांक 61

संपादक - देवेश ठाकुर

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

प्रबंध संपादिका :

डॉ. रोहिणी शिवबालन

संपादक-प्रकाशक :

डॉ. देवेश ठाकुर

संयुक्त संपादक :

डॉ. सतीश पांडेय

उप-संपादक :

डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट

संपादकीय-संपर्क :

बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (पश्चिम), मुंबई-400 084
टेलिफोन : 25161446
Email : sameecheen@gmail.com

विशेष :

'समीचीन' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबद्ध रचनाकारों के हैं। संपादक-प्रकाशक की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय-क्षेत्र मात्र मुंबई होगा। सभी पदाधिकारी पूर्णरूप से अवैतनिक।

विद्वत परीक्षक मंडल:(Peer Review Team)

1. **डॉ. शरेशचंद्र चुलकीमठ**
   पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
   कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़

2. **डॉ. अरुणा दुबलिश**
   पूर्व प्राचार्य, कनोहरलाल महिला
   स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)

3. **डॉ. पुष्पारानी**
   अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
   कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
   कुरुक्षेत्र, हरियाणा

4. **डॉ. नरेंद्र मिश्र**
   हिंदी विभाग,
   जयनारायण व्यास, विश्वविद्यालय, जोधपुर

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : देवेश ठाकुर ने प्रिंटोग्राफी सिस्टम (इंडिया) प्रा. लि., 13/डी, कुर्ला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नारी सेवा सदन रोड, नारायण नगर, घाटकोपर (प.), मुंबई-400086 में छपवाकर बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (प.), मुंबई-400084 से प्रकाशित किया।

संपादक : **देवेश ठाकुर**

वर्ष-12, मूल्य - 50 रुपए अंक-22, पूर्णांक-61

सहयोग : एक प्रति रु. 50 /-, **वार्षिक** रु.100/-, **पंच वार्षिक** रु.500/-, **आजीवन सदस्यता** रु. 5000/-

MAHATMA PHULE MAHAVIDYALAYA
PIMPRI, PUNE-17

बात बोलेगी भेद खोलेगी...

डॉ. वैशाली दबंगे (खेडकर)

सबसे खतरनाक होता है
मुर्दा शांति से भर जाना
तड़प का न होना सब सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर और काम से लौटकर घर जाना
सबसे खतरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना।[१]

सुप्रसिद्ध कवि पाश की उपर्युक्त पंक्तियाँ मनुष्य के निरूद्देश्य एवं निराशापूर्ण जीवन की भयावहता को दशार्ती है। सपने मनुष्य को क्रियाशील बनाते हैं। उसमें उत्साह, उमंग एवं उर्जा भरते हैं। अतः 'सपनों का मर जाना' मनुष्य के लिए सबसे चिंतनीय स्थिति है। वैसे, मनुष्य के विकास में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि सभी परिस्थितियाँ सहयोग करती हैं। अतः एक सजग व्यक्ति अपने विवेकवादी दृष्टि से इनमें घटित गलत कार्यों पर निरंतर हस्तक्षेप करता है। यथाशक्ति इनमें सुधार लाने का प्रयत्न करता है। दरअसल हर बार जीतना ही महत्वपूर्ण नहीं होता बल्कि निरंतर व्यवस्था से लड़ते रहना भी मायने रखता है। किंतु धीरे-धीरे मनुष्य स्वार्थ में अंधा होकर अपने सामाजिक दायित्व को भूलता जा रहा है। तभी तो वह मनुष्य से यंत्र में परिवर्तित हो रहा है। उसके जीवन में मानो 'मुर्दा शांति' ही छा गयी है। आज समाज में बेरोजगारी, आतंकवाद, बलात्कार, भूखमरी, भ्रष्टाचार, आर्थिक विषमता, धर्मांधता आदि कई समस्याएँ हैं, जिनमें निरंतर बढ़ोत्तरी ही हो रही है। हम आज तक इन समस्याओं को जड़ से मिटाने में असफल रहे हैं। राजनैतिक भ्रष्टाचार एवं अनैतिक व्यवस्था से इनमें इजाफा ही हुआ है। राजनीति मनुष्य के जीवन को संचालित करती है। उसके विकास में सहयोग देती है। वही राजनीतिक व्यवस्था मनुष्य के लिए समस्या निर्माण का संसाधन बनी है। भारत में लोकतंत्र है। यहाँ हर किसी को अभिव्यक्ति, संचार, धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है, किंतु धीरे-धीरे ये अधिकार सिकुड़ रहे हैं। आम आदमी आँख और कान बंद करने में ही धन्यता मान रहा